Sanskrita Se Hi Apani Pahachana

संस्कृत से ही अपनी पहचान

Document Information

Text title : Sanskrita Se Hi Apani Pahachana

File name : sanskRRitasehIapanIpahachAna.itx

Category : misc, sanskritgeet

Location : doc_z_misc_general

Author : Vasudev Dwivedi Shastri

Proofread by : Mandar Mali

Description/comments : Sanskrita Prachara Pustaka Mala Sangraha 37

Acknowledge-Permission: Uttara Pradesha Sarvabhauma Sanskrit Prachar Karyalaya

Latest update : May 19, 2024

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

Please help to maintain respect for volunteer spirit.

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

May 19, 2024

sanskritdocuments.org

Sanskrita Se Hi Apani Pahachana

संस्कृत से ही अपनी पहचान

संस्कृत पढ़कर ही हम, भाई, अपने को पहचान सकेगें,
इसके द्वारा ही हम सचमुच अपना गौरव जान सकेगें । ०
कितना है प्राचीन हमारा विश्वविदित इतिहास महान,
कितनी है उत्कृष्ट सभ्यता संस्कृति और कला विज्ञान,
हिमगिरि से भी ऊँचा उज्ज्वल जीवन का कैसा आदर्श,
व्योम-समान विशाल हृदय का वह कैसा अनुपम उत्कर्ष,
संस्कृत की ही पुण्य पंक्तियों से हम यह सब जान सकेगें,
संस्कृत पढ़कर ही हम भाई अपने को पहचान सकेगें । १
कैसे हुए महान पुरुष हैं यहाँ एक से एक उदार,
ज्ञानी, बली, विजेता, धार्मिक, स्नेह भक्ति के सिन्धु अपार,
मेधावी, स्वाधीन-विचारक सत्य-पक्षपाती, प्रणवीर,
अतुल साहसी, अध्यवसायी, कष्ट-सहिष्णु महारण धीर,
ऐसे अपने पूज्य-पूर्वजों को हम कैसे जान सकेगें,
जब तक हम संस्कृत के चरणों का रजकण कुछ पा न सकेगें । २

– रचयिता - श्री. वासुदेव द्विवेदी शास्त्री

Proofread by Mandar Mali

Sanskrita Se Hi Apani Pahachana
pdf was typeset on May 19, 2024

Please send corrections to *sanskrit@cheerful.com*